ANCIENT INDIAN HISTORY & ARCHAEOLOGY, PATNA UNIVERSITY, PATNA

ऐतिहासिक शोध विधि

PG / M.A. 3rd Semester

CC-12, Historiography, History of Bihar & Research Methodology

Dr. Manoj Kumar
Assistant Professor (Guest)
Dept. of A.I.H. & Archaeology,
Patna University, Patna-800005
Email- dr.manojaihcbhu@gmail.com

PATNA UNIVERSITY, PATNA

ऐतिहासिक शोध विधि

इतिहास के लिए अंग्रेजी में History शब्द का प्रयोग होता है। इसका मूल शब्द हिस्टोरिया है। इसका अर्थ होता है अनुसन्धान या जांच के द्वारा प्राप्त ज्ञान। यद्यपि भूतकालीन अभिलेख, पृथ्वी, नक्षत्र आदि सभी के होते हैं किंतु यहां हम मानव इतिहास की चर्चा करते हैं। मानव की उपलब्धि का पूर्ण सही और अर्थपूर्ण अभिलेख इतिहास कहलाता है। ऐतिहासिक अनुसंधान के प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं :-

1. इतिहास की विषय सामग्री अपरिवर्तनीय भूतकालीन परिधि में बंधी होती है। भूतकाल इन घटनाओं को प्रस्तुत नहीं कर सकते हैं।
2. ऐतिहासिक आंकड़ों की एक विशेषता यह है कि वे भूतकालीन घटनाओं के अभिलेख के रूप में ही मिलते हैं जिनका वर्तमान अध्ययन से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष संबंध होता है। वास्तव में भूतकाल इन अवशेषों के आधार पर उन घटनाओं को सजीव रूप में चित्रित करने का प्रयास किया जाता है।
3. ऐतिहासिक आंकड़ों के विश्लेषण में व्यक्तिगत पक्षपात के लिए बहुत स्थान होता है अतः ऐतिहासिक अनुसंधानकर्ता को ऐतिहासिक

आंकड़ों के विश्लेषण में बहुत ही सतर्कता या सावधानी रखनी पड़ती है।

4. विज्ञान में वर्तमान के आधार पर भविष्य के विषय में पूर्व कथन करते हैं किंतु इतिहास में वर्तमान के आधार पर भूत का विश्लेषण करने का प्रयास करते हैं।

वास्तव में ऐतिहासिक अनुसंधान को उचित रूप में पूर्ण करना अत्यंत कठिन है क्योंकि सही आंकड़े प्राप्त करने में बड़ी कठिनाई होती है। जॉन डब्ल्यू बेस्ट के अनुसार "ऐतिहासिक अनुसंधान का संबंध ऐतिहासिक समस्याओं के वैज्ञानिक विश्लेषण से है। इसके विभिन्न पद के संबंध में एक नई सूझ पैदा करते हैं जिसका संबंध वर्तमान और भविष्य से होता है ।"

ऐतिहासिक अनुसंधान की समस्याएं :-

ऐतिहासिक अनुसंधान की निम्नलिखित समस्याएं हैं:

1. उपयुक्त समस्या का चयन एक कठिन समस्या है। समस्या ऐसी होनी चाहिए जिसका समुचित अध्ययन और विश्लेषण संभव हो। अधिकतर प्रारंभिक अनुसंधानकर्ता बड़ी विस्तृत समस्या को ले लेते हैं जिसका निर्वाह कठिन हो जाता है।

2. उपयुक्त परिकल्पना के निर्माण में भी कठिनाई आती है जो अत्यंत महत्वपूर्ण है। इससे दिशा निर्देश मिलता है। उपयुक्त परिकल्पना के अभाव में ऐतिहासिक आंकड़ों की प्राप्ति निरुदेश्य संग्रह मात्र हो जाती है।
3. आंकड़ों का संग्रह और विश्लेषण भी अनेक कठिनाइयां प्रस्तुत करता है। ऐतिहासिक अनुसंधानकर्ता उस काल की घटनाओं का प्रत्यक्ष दर्शक तो नहीं होता है, उसे प्राप्त सामग्री पर विश्वास करना पड़ता है तथा अपनी सूझबूझ से निष्कर्ष निकालना पड़ता है।
4. ऐतिहासिक अनुसंधानकर्ता प्राप्त सामग्री का विश्लेषण करते समय बहुधा उस काल की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थिति एवं व्यवस्था का समुचित ध्यान नहीं रखते जो किसी भी क्षेत्र में व्यक्तियों के चिंतन तथा व्यवहार को एक बड़ी सीमा तक प्रभावित करती है।

ऐतिहासिक अनुसंधान के मूल उद्देश्य : इसका मूल उद्देश्य निम्न है

1. भूत के आधार पर वर्तमान को समझना एवं भविष्य के लिए सतर्क होना है। किसी घटना, समस्या अथवा व्यवहार से समुचित

मूल्यांकन के लिए उसके ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से परिचित होना आवश्यक है।

2. किसी क्षेत्र विशेष के व्यवसायिक कार्यकर्ताओं के लिए पूर्व अनुभव के आधार पर भावी कार्यक्रम की रूपरेखा निर्धारित करने में सहायता करना है।
3. यह अनुसंधान इस तथ्य को स्पष्ट करता है कि किन परिस्थितियों में किन कारणों से व्यक्ति अथवा व्यक्तियों ने एक विशेष प्रकार का व्यवहार किया है, उसका प्रभाव उसके ऊपर तथा समाज पर क्या पड़ा है।
4. ऐतिहासिक अनुसंधान इस तथ्य का भी विश्लेषण करता है कि आज जो सिद्धांत और क्रियाये व्यवहार में है उसका उद्भव तथा विकास किन परिस्थितियों में हुआ है।

ऐतिहासिक अनुसंधान का महत्व :

1. इतिहास भूतकालीन घटनाओं को स्पष्ट करते हुए उसके गुण-दोषों से परिचित कराता है। ऐतिहासिक अनुसंधान शिक्षा, मनोविज्ञान के क्षेत्र में स्थित वर्तमान क्रियाओ और प्रवृतियों के आधार पर एक सम्यक विवेचन करता है।

2. ऐतिहासिक अनुसंधान शिक्षा तथा मनोविज्ञान के क्षेत्र में सिद्धांत एवं क्रिया-पक्ष की आलोचनात्मक व्याख्या करता हुआ उनके वर्तमान स्वरूप की ऐतिहासिक एवं विकासात्मक स्थिति को स्पष्ट करता है।
3. ऐतिहासिक अनुसंधान भूतकालीन त्रुटियों अथवा गलतियों से सतर्क होकर भविष्य के प्रति सतर्क करता है।
4. शिक्षा के क्षेत्र में ऐतिहासिक अनुसंधान समाज एवं विद्यालय के संबंधों की व्याख्या करता है तथा मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में इसके कारणों का विश्लेषण करता है।
5. ऐतिहासिक अनुसंधान शिक्षाशास्त्रियों, मनोवैज्ञानिकों तथा शोध कार्य में लगे शोधार्थियों के प्रति सम्मान प्रकट करता है।
6. अंधविश्वासों एवं भ्रमों का निवारण करता है।

ऐतिहासिक अनुसंधान के विभिन्न पद :- ऐतिहासिक अनुसंधान के विभिन्न पद निम्नलिखित हैं:

1. आंकड़ों का संग्रह।
2. आंकड़ों का विश्लेषण।
3. उपर्युक्त के आधार पर तथ्यों के विश्लेषण एवं रिपोर्ट।
4. प्राथमिक और द्वितीयक स्रोत से आंकड़े प्राप्त करना।

5. प्रतिवेदन लिखना प्रारंभ करना।
6. आंकड़ों का परीक्षण करते जाना।
7. अनुसंधान प्रतिवेदन का वर्णात्मक भाग पूर्ण करना।
8. अनुसंधान प्रतिवेदन का विश्लेषणात्मक भाग पूर्ण करना।
9. आंकड़ों का वर्तमान के प्रयोग और भविष्य के लिए परिकल्पना का निर्माण करना।

ऐतिहासिक अनुसंधान का क्षेत्र :

वैसे तो ऐतिहासिक अनुसंधान का क्षेत्र बहुत व्यापक है। संक्षेप में इसके क्षेत्र निम्नलिखित हैं -

1. बड़े शिक्षाशास्त्रियों एवं मनोवैज्ञानिकों के विचार।
2. संस्थाओं एवं प्रयोगशालाओं द्वारा किए गए कार्य ।
3. विभिन्न कालों में शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक विचारों के विकास की स्थिति।
4. एक विशेष प्रकार की विचारधारा का प्रभाव और उसके स्रोत।
5. शिक्षा के लिए संवैधानिक व्यवस्था।
6. पुस्तक सूची की तैयारी करना।